

क्यूबा: एक आतंकवाद प्रायोजक राज्य के रूप में नामति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के वदेशि वभिग ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के कृत्यों हेतु बार-बार सहायता प्रदान करने और आतंकवादियों को सुरक्षति बंदरगाह उपलब्ध कराने पर क्यूबा को एक आतंकवाद प्रायोजक राज्य के रूप में नामति किया है ।



प्रमुख बदि:

देशों पर प्रतबिधों के लयि प्रावधान:

- संयुक्त राज्य अमेरिका के वदेशि वभिग ने कसिी भी देश को प्रतबिधति करने के लयि नमिनलखिति चार श्रेणयिों नरिधारति की हैं:
 - संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वदेशी सहायता पर प्रतबिध ।
 - रकषा नरियात और बकिरी पर प्रतबिध ।
 - दोहरे उपयोग की वस्तुओं के नरियात पर कुछ नर्यितरण ।
 - ऐसे देशों और वयक्तयिों पर भी प्रतबिध लगाया जा सकता है जो नामति देशों के साथ वयापार में संलग्न हैं ।
- वर्तमान में इस सूची में चार देश शामिल हैं: सीरयिा, ईरान, उत्तर कोरयिा और क्यूबा ।
 - क्यूबा को वर्ष 2015 में इस सूची से हटा दिया गया था परंतु उसे फरि से इस सूची में शामिल कर लयिा गया है ।

क्यूबा आतंकवाद प्रायोजक राज्य के रूप में नामति: USA ने क्यूबा पर नमिनलखिति आरोप लगाए हैं-

- वेनेजुएला की आंतरकि राजनीति में हस्तकषेप ।
- क्यूबा के लोगों का दमन ।
- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का समर्थन करना ।
- संयुक्त राज्य अमेरिका की न्याय वयवस्था में हस्तकषेप ।

यूएसए-क्यूबा संबंध:

- संयुक्त राज्य अमेरिका और क्यूबा के बीच 60 वर्षों से अधकि समय तक तनावपूर्ण संबंध रहे हैं । संयुक्त राज्य अमेरिका समर्थति सरकार ने वर्ष 1959 में फदिल कास्तुरो की सरकार का तख्तापलट कर सत्ता पर कब्ज़ा कर लयिा था ।
- पूर्व राष्ट्रपति बिराक ओबामा और राउल कास्तुरो ने द्वपिक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने के लयि कई कदम उठाए, जनिमें राजनयकि संबंधों को बहाल करना, राजनयकि यात्राएँ और वयापार का वसितार करना शामिल है ।

- ट्रंप प्रशासन ने पर्यटन और अन्य वाणज्यिक क्षेत्रों पर प्रतिबंधों को फिर से लागू करके पछिले समझौतों की शर्तों को उलट दिया है।

हवाना सिंड्रोम:

- वर्ष 2016 के उत्तरार्ध में हवाना (क्यूबा की राजधानी) में तैनात USA के राजनयिकों और अन्य कर्मचारियों ने अजीब सी आवाज़ें सुनने तथा शारीरिक संवेदनाओं के बाद इस बीमारी को महसूस किया।
- इस बीमारी के लक्षणों में मतिली, तीव्र सरिदरद, थकान, चक्कर आना, नींद की समस्या आदि शामिल हैं, जिनमें हवाना सिंड्रोम (Havana Syndrome) के रूप में जाना जाता है। अमेरिका ने क्यूबा पर इस बीमारी को फैलाने का आरोप लगाया था लेकिन क्यूबा ने इस बीमारी के बारे में किसी भी तरह की जानकारी होने से इनकार कर दिया।

तनावपूर्ण संबंधों के ऐतिहासिक कारण:

- क्यूबा की क्रांति: संयुक्त राज्य अमेरिका-क्यूबा के अशांतपरि संबंधों की जड़ें शीत युद्ध से संबंधित हैं। वर्ष 1959 में फदिल कास्त्रो और क्रांतिकारियों के एक समूह ने हवाना (क्यूबा की राजधानी) की सत्ता पर कब्जा कर लिया। उन्होंने संयुक्त राज्य समर्थित फुलगेन्सियो बतस्ता की सरकार को उखाड़ फेंका।
- **क्यूबा मसिाइल संकट:**
 - संयुक्त राज्य अमेरिका ने वर्ष 1961 में क्यूबा के साथ अपने राजनयिक संबंध तोड़ दिए और फदिल कास्त्रो शासन को उखाड़ फेंकने के लिये गुप्त अभियान शुरू किया।
 - क्यूबा मसिाइल संकट उस समय शुरू हुआ जब अमेरिकी एजेंसियों द्वारा क्यूबा की सरकार का तख्तापलट करने के प्रयास (जिसमें 'बे ऑफ पगिस आक्रमण' के नाम से भी जाना जाता है) के बाद क्यूबा ने सोवियत संघ को गुप्त रूप से अपने द्वीप पर परमाणु मसिाइलों को स्थापित करने की अनुमति दी।
 - अंत में नकिता खरुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत संघ ने अमेरिकी राष्ट्रपति कैंनेडी द्वारा क्यूबा पर आक्रमण न करने और तुर्की से अमेरिकी परमाणु मसिाइलों को हटाने की प्रतिज्ञा के बदले क्यूबा से रूस की मसिाइलों को वापस लाने पर सहमत वियक्त की।
- **सोवियत संघ से व्यापार:** क्यूबा की क्रांति के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका ने फदिल कास्त्रो की सरकार को मान्यता दी परंतु नए प्रशासन द्वारा सोवियत संघ के साथ व्यापार में वृद्धि, अमेरिकी स्वामित्व वाली संपत्तियों का राष्ट्रीयकरण और संयुक्त राज्य अमेरिका से आयात पर करों में वृद्धि किये जाने के कारण अमेरिका ने क्यूबा पर आर्थिक दंड लगाना शुरू कर दिया।
- **कैंनेडी सरकार द्वारा लागू प्रतिबंध (1962):** क्यूबा से चीनी (Sugar) आयात में कटौती करने के बाद अमेरिका ने क्यूबा के लिये अपने सभी नरियातों पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे राष्ट्रपति जॉन एफ कैंनेडी द्वारा पूर्ण आर्थिक प्रतिबंध में बदल दिया गया, इसमें कठोर यात्रा प्रतिबंध भी शामिल थे।

भारत का रुख:

- **आर्थिक नाकेबंदी को समाप्त करने का समर्थन:** हाल ही में जब अमेरिका ने वर्ष 2019 में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में क्यूबा की सदस्यता का वरिध किया, तो संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) में उन सभी देशों के साथ भारत भी खड़ा हुआ जिनोंने क्यूबा के खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका की अन्यायपूर्ण और लंबे समय से चली आ रही आर्थिक नाकेबंदी को समाप्त करने की मांग की थी।
- **अमेरिकी नाकेबंदी की आलोचना:** संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत ने इस बात पर जोर दिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा क्यूबा के खिलाफ इस घेराबंदी का निरंतर बने रहना वैश्विक जनमत के खिलाफ है और यह बहुपक्षवाद तथा संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता को कमजोर करता है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा का रुख:

- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने क्यूबा के खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा लगाई गई आर्थिक, वाणज्यिक और वित्तीय नाकेबंदी को समाप्त करने की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए इस संदर्भ में वर्ष 1992 से प्रतिवर्ष एक प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

आगे की राह

- **द्विपक्षीय वार्ता को फिर से शुरू करना:** वाशिंगटन द्वारा क्यूबा के खिलाफ नाकाबंदी को फिर से शुरू करना किसी भी देश के खिलाफ लागू एकतरफा प्रतिबंधों की सबसे अन्यायपूर्ण और लंबी प्रणाली प्रतीत होती है। द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से दोनों देशों के बीच संबंधों को सुधारने की तत्काल आवश्यकता है।
- **लोकतंत्र की आत्मा का सम्मान करना:** क्यूबाई आप्रवासियों (Immigrant) और लोगों की एक बड़ी आबादी की मूल जड़ें संयुक्त राज्य अमेरिका में हैं, अतः दोनों देश लोकतंत्र और अंतर्राष्ट्रवाद की भावना के लिये सुलह की दशा में प्रयास करें।
- **भारत के लिये:** भारत के संबंध दोनों देशों के साथ अच्छे हैं। अगर अमेरिका और क्यूबा के बीच तनाव बढ़ता है तो भारत के लिये रशियों को तर्कसंगत रूप से संतुलित बनाए रखना ज़रूरी है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

